प्राणी

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान का **न्यूज़लेटर**

पांचवा संस्करण
जनवरी-मार्च 2022

हमें फॉलो करें

छायाचित्र
मास का

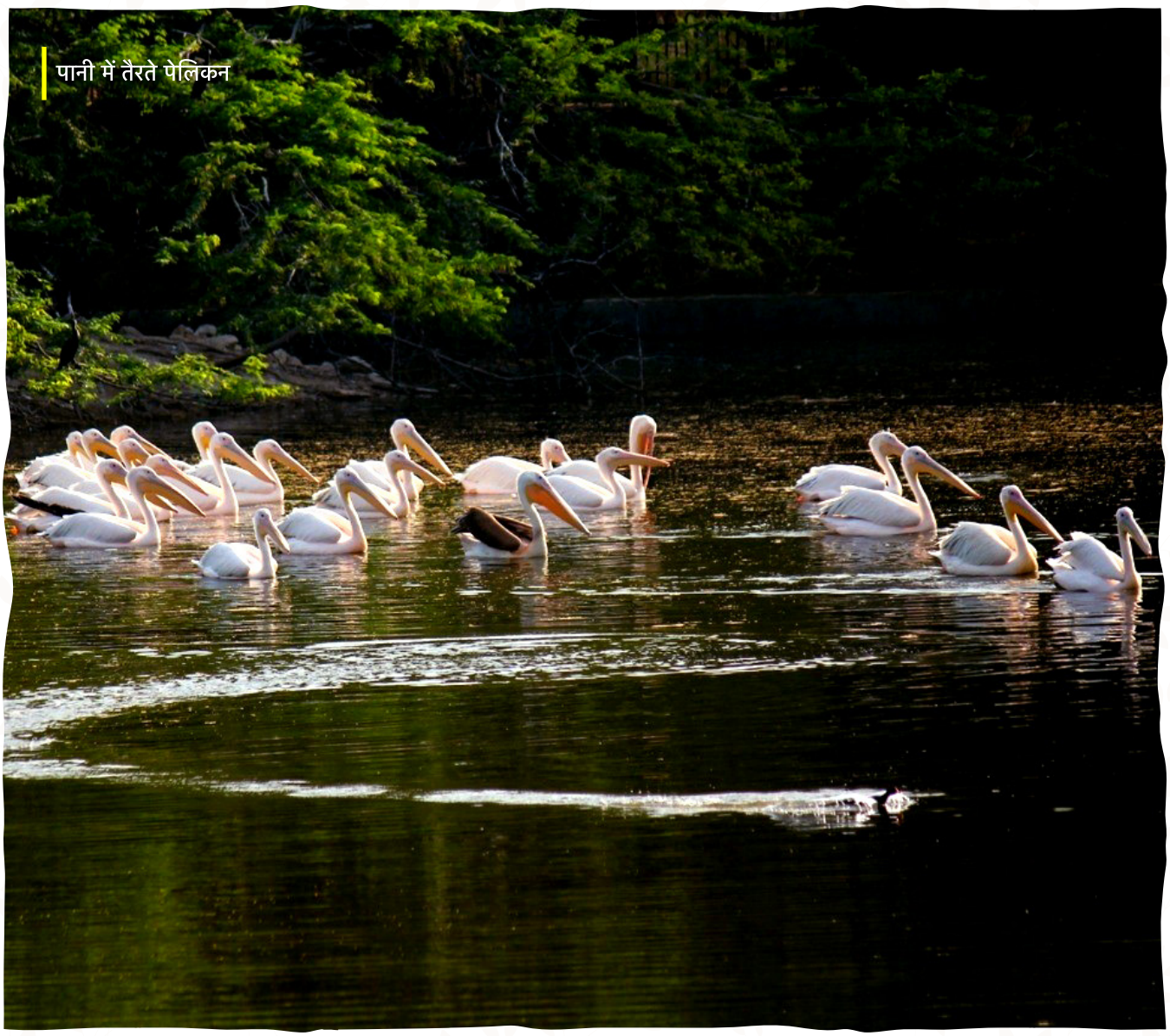

पानी में तैरते पेलिकन

NATIONAL ZOOLOGICAL PARK
NEW DELHI

पांचवा संस्करण

मार्च 2022

संपादक
धर्मदेव राय, आई एफ एस

संपादकीय टीम
अनामिका, आई एफ एस
मनोज कुमार,जीव विज्ञान सहायक
देविका, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
वाशु वर्मा, शिक्षा सहायक

छायाचित्र
डॉ अभिजीत भावल
संतोष कुमार
विनीत चौहान

प्रकाशित द्वारा
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, मथुरा रोड,
नई दिल्ली

रूपरेखा द्वारा
कान्सेप्ट एण्ड बिऑन्ड

आवरण चित्र
सर्दियों की संध्या में शांत
जल में तैरते हवासिल पक्षी

निदेशक की कलम से

मुझे जनवरी से मार्च 2022 तक की अवधि के लिए राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, नई दिल्ली की त्रैमासिक पत्रिका **'प्राणी'** प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान का मुख्य उद्देश्य लुप्तप्राय वन्यजीवों के संवर्धन, संरक्षण एवं संरक्षण शिक्षा, अनुसंधान के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करना तथा दिल्ली और उसके पड़ोसी क्षेत्रों के लोगों को एक स्वस्थ और सस्ता मनोरंजन प्रदान करना है।

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण, अनुसंधान, प्रजनन और शिक्षा के लिए बहुत योगदान दे रहा है। यहाँ राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में पक्षियों और जानवरों को उनके प्राकृतिक आवास जैसा वातावरण प्रदान किया गया है। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान लुप्तप्राय प्रजातियों को घर ही प्रदान नही करता बल्कि उन्हें प्रजनन का वातावरण भी देता है ताकि जंगलों में एक बार फिर उनकी संख्या बढ़ सके।

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान ने चिड़ियाघर में कई कार्यक्रम आयोजित किए जैसे संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम, जागरूकता अभियान आदि। हर साल की तरह हमने इस वर्ष भी पृथ्वी दिवस मनाया, जिसमें हमने चिड़ियाघर परिसर में पचहत्तर पौधे "आजादी का अमृत महोत्सव" के उत्सव पे लगाए गये।

मैं इस तिमाही रिपोर्ट के संकलन के लिए चिड़ियाघर के कर्मचारियों की कड़ी मेहनत, उनके सहयोग और सभी वर्गों की भागीदारी की सराहना करता हूं।

मैं तिमाही समाचार पत्र के संकलन के लिए श्रीमती अनामिका, संयुक्त निदेशक की भी सराहना करता हूं।

विषयसूची:

1. अन्तर्राष्ट्रीय वन दिवस

2. फोटो फीचर

3. चिड़ियाघर की स्वरचित कहानी/कविताएँ

4. राष्ट्रीय प्राणी उद्यान ख़बरों में

5. अन्य चिड़ियाघरों की ख़बरें

6. महीने का वन्यजीव : कृष्ण मृग

7. महीने का वृक्ष : पलाश का पेड़

8. ग्रीन टिप्स : प्लास्टिक एकल प्रयोग

9. बच्चो का कोना

10. शब्दकोष से 'शीत निंद्रा'

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस

संयुक्त राष्ट्र द्वारा सभी प्रकार के वनों के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने हेतु वर्ष 2012 में 21 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस के रूप में घोषित किया गया। वृक्षारोपण अभियान जैसे- वनों और वृक्षों के संरक्षण, संवर्धन को शामिल करने वाली गतिविधियों के आयोजन हेतु देशों को स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रयास करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस 21 मार्च, 2022 को मनाया गया।

इस अवसर पर केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के मंत्री माननीय श्री भूपेन्द्र यादव एवं राज्य मंत्री माननीय श्री अश्वनी कुमार चौबे उपस्थित रहे। इस वर्ष वन दिवस की थीम "वन और टिकाऊ उत्पादन एवं खपत" थी।

केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के मंत्री माननीय श्री भूपेन्द्र यादव एवं राज्य मंत्री माननीय श्री अश्वनी कुमार चौबे जी एवं अन्य वन अधिकारी चिड़ियाघर निरीक्षण करते हुए।

श्री भूपेन्द्र यादव जी ने अपने संबोधन में कहा कि धरती पर जितनी हरियाली होगी उतना ही प्रदूषण घटेगा और जलवायु परिवर्तन की समस्याओं से निजात मिलेगी। इसलिए हर किसी को प्रकृति और पर्यावरण के प्रति गंभीर होते हुए पौधारोपण करना चाहिए, साथ ही प्रकृति की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए।

श्री अश्वनी कुमार चौबे जी ने अपने संबोधन में कहा कि पर्यावरण की रक्षा के लिए युवाओं को आगे आने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस जैसे वार्षिक दिवस का उत्सव तब सही मायने में फलदायी होगा जब समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति वन संरक्षण एवं लकड़ी व उससे बने उत्पादों के सतत उपयोग जैसे मुद्दों को समझने में सक्षम होगा। इससे वन आश्रित लोगों को आजीविका सुरक्षा मिलेगी।

केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के मंत्री माननीय श्री भूपेन्द्र यादव एवं राज्य मंत्री माननीय श्री अश्वनी कुमार चौबे जी पौधरोपण करते हुए।

वन दिवस के अवसर पर चिड़ियाघर में पौधारोपण अभियान का शुभारंभ किया गया एवं वन्यजीवों पर आधारित पुस्तकों का विमोचन किया गया। इस अभियान के तहत आजादी के अमृत महोत्सव से प्रेरित होकर चिड़ियाघर में कुल 75 पौधे लगाये गये।

श्री भूपेन्द्र यादव जी ने माखन कटोरी एवं श्री अश्वनी कुमार चौबे जी ने रुद्राक्ष का पौधा लगाया। इसी के साथ चन्दन, गुलाब,अगर लकड़ी आदि पौधारोपण को प्रोत्साहन दिया गया जो थीम के अनुसार "वन और टिकाऊ उत्पादन एवं खपत" में भी भूमिका निर्वहन कर सके।

फोटोफीचर

1. “आजादी का अमृत महोत्सव”

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहचान के बारे में प्रगतिशील है। “आज़ादी का अमृत महोत्सव” की आधिकारिक यात्रा 12 मार्च, 2021 को शुरू होती है, जो हमारी स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के लिए 75 सप्ताह की उलटी गिनती शुरू करते हुए 15 अगस्त, 2022 को एक वर्ष के बाद समाप्त होगी।

फोटोफीचर

2. एशियाई जलपक्षी जनगणना (6 जनवरी)

फोटोफीचर

3. स्वच्छ भारत अभियान (17 जनवरी)

फोटोफीचर

4. विश्व आद्रभूमि दिवस (2 फरवरी)

फोटोफीचर

5. अंतर्राष्ट्रीय वन्यजीव दिवस (3 मार्च)

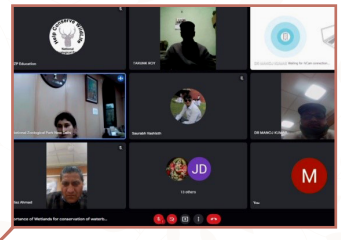

फोटोफीचर

6. राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में आई. एफ. एस. वाकिंग टेस्ट

चिड़ियाघर की स्वरचित

कहानी/कविताएँ

इंद्रधनुषी छटा का अदभुत आनंद ,
लिया जीवन में पहली बार ,
प्रक्रति के विभिन्न रूपों से ,
हुआ साक्षात्कार पहली बार ।

किया पदार्पण चिड़ियाघर में ,
जीवन में हमने पहली बार ,
भिन्न भिन्न प्रकार पौधों के देखे,
उससे भी विविध जीवों का संसार ।

दिल्ली के दिल में बसता है,
चिड़ियाघर का अजब संसार ,
चलो गाड़ी से या फिर पैदल,
आनंद दोनों का है अपरम्पार,
छटा देखी चिड़ियाघर की,
जीवन में हमने पहली बार ।

भांति भांति के वन्य जीव हे इसमें
स्वछन्द कलरव करते देखो
तालावो में विचरते पक्षी
आकाश में उड़ते देखा ।

कहीं गर्जना शेरो की और
कहीं हाथियों की चिंघाड़ ,
कही चहचहाहट पक्षियों की हे ,
तो कही हे मूक आभार ,
ऐसा सुंदर रूप प्रकृति का ,
जीवन में देखा पहली बार ।

देश विदेश के दर्शक इसमें,
नहीं उम्र की कोई सीमा,
प्रफुल्लित होते चेहरे सबके
हमने देखे यहाँ पहली बार ।

कभी कल्पना की थी मन में
जंतु होंगे कैदी इसमें
पर, असली जंगल जैसे परिवेश
में, इनको देखा पहली बार ।

मात्र कल्पना छीर्ण हो गई
जब यह संगम वन जीवों का
जीवन में देखा पहली बार
सच में यदि प्रकृति को चाहो ,
देखों चिड़ियाघर का यह संसार ।

रोचक, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक ,
सबका उत्तम मिश्रण हे यह,
नहीं प्रदूषण किसी तरह का,
न कोई कोलाहल,

ऐसा सुंदर उपहार प्रकृति का ,
जीवन में हमने देखा पहली बार,
सच में यदि प्रकृति को चाहो ,
यह चिड़ियाघर देखो बारम्बार ।
सच में यदि प्रकृति को चाहो ,
यह चिड़ियाघर देखो बारम्बार ।

राकेश शर्मा
(प्रयोगशाला सहायक, राष्ट्रीय प्राणी उद्यान)

चिड़ियाघर की स्वरचित
कहानी/कविताएँ

प्रकृति और चिड़ियाघर

वर्षाऋतु आई है धरती पर नई चमक लाई है ।

हुआ सन्नाटा दूर कोरोना काल का,नई उमंग आई है ।

मन मेरा हर्षाया है, चिड़ियाघर जाने का मौसम आया है ।

यहाँ प्रकृति की छटा निराली, फैली चरो और हरियाली ।

इस वसुधा का हरा-भरा आँगन मनमोहने वाला है ।

समस्त दिशाओं मे सुगंधित मधुमय सा मतवाला है ।

घूमते बच्चो की किलकारी चारों और गूंज रही है ।

रंग-बिरंगे मेहमान पंछियों का कोलाहल विस्मयकारी है।

बंदर खुश, भालू खुश, उछले भरते हिरण भी खुश है ।

हाथी सूंड हिला हिलाकर दिखाता अपना नाच है।

शेर, चीता,सांभर लौटी खुशियाँ मना रहे है ।

पंख फैला कर मोर कर रहा सबका स्वागत है।

पशु-पक्षी प्रफुल्लित हो नभ की और सुस्वर में ।

गाते हुए गीत दे रहे है सबको ये संदेश है।

हरा-भरा वातावरण होगा पेड़-पौधो से

होगा हरियाली से प्रकृति का साज-श्रृंगार ।

सभी फलेंगे-फूलेंगे, होगे एक दूसरे के मीत।

तभी होगी हमारी प्रकृति की जीत ।

क्योंकि प्रकृति जैसा पाएगी, उसका कई गुना लौटाएगी।

राजकुमार खन्ना
निम्न श्रेणी लिपिक

चिड़ियाघर की स्वरचित
कहानी/कविताएँ

खुशी वाली खिड़की

उसने कब सोचा था जिस चिड़ियाघर में वह अपने विद्यालय की तरफ से कभी मुक्त में प्रकृति और उसके जीवों का लुत्फ उठा कर आई थी आज वही जगह उसकी जीविकोपार्जन का जरिया बन जाएगी। सुबह दफ्तर आना और शाम को लौट जाना जीवन इसी प्रकार चलता रहा पहले दिन फिर महीने और कब देखते-देखते साल निकल गया पता ही ना चला। जो उत्साह साल के शुरू में नौकरी प्रारंभ करने पर था वह अब रोजमर्रा के काम से बोरियत में बदलने लगा तभी हमारी ड्यूटी निदेशक कार्यालय से टिकट बुकिंग खिड़की पर जा पहुंची।

शनिवार, रविवार और किसी राजपत्रित अवकाश वाले दिन इस मनमोहक स्थान को देखने भीड़ का सैलाब आ जाता है कई बार तो भीड़ की संख्या अखबारों की सुर्खियां भी बनी। दिन सोमवार विश्वकर्मा दिवस के उपलक्ष्य में लोगों का टिकट लेने के लिए धक्का-मुक्की जारी था। आज मध्यमवर्गीय परिवार छुट्टी पर थे इसलिए शायद वह बहुत ज्यादा व्यस्त थी। लोगों को "कृपया करके खुले पैसे दीजिए" कहना फिर वापसी में टिकट, एक मुस्कान, धन्यवाद और शुभ यात्रा का संदेश देना उसे कंठस्थ हो गया था।

कई बार भीड़ व धूप में खड़े होने की वजह से लोगों का उस पर चिल्लाना आम बात थी पर न तो वह अपना धैर्य खोती और न ही मुस्कान। फिर कुछ देर बाद इसी भीड़ में एक दंपति आता है और वह उसी अंदाज में उसका स्वागत करती हैं और दंपति खुशी-खुशी टिकट लेकर चला जाता है और फिर से वह अपने काम में व्यस्त हो जाती हैं।

तभी कुछ सेकंड बाद वह दंपति वापस आता है और दंपति जोड़े में से पुरुष कहता है कि "मैडम मेरी पत्नी आपसे कुछ कहना चाहती हैं" जवाब में "जी बोलिए" कहकर इंतजार करती हैं उसकी पत्नी का यह कहना कि "मैडम हम बहुत जगह घूमने हैं लेकिन आज तक किसी को भी इतने धैर्य और खुशी के साथ जनता को डील करते नहीं देखा" जैसे उसे खुशी से भर गया था और फिर जवाब में बहुत-बहुत शुक्रिया आपका कहकर इस संवाद को खत्म करती हैं।

उसकी बगल सेइस दृश्य को देखती हुई मैं यह सोच रही थी कि आज उस दंपति जोड़े को सारे जानवर दिखेंगे या नहीं ये तो नहीं मालूम लेकिन उन लोगों को मुस्कान और शिष्टाचार से भरे संवाद ने चिड़ियाघर को कभी ना भूलने वाला वाक्या तो बना ही दिया।

"गुस्से गाली गलौज से मत पालिये बैर
चिड़ियाघर को सींचता मीठे शब्दों का ढेर"

नाम व पद: ज्योति, लिपिक
(प्रतियोगिता: लघुरोचक वास्तविक कहानी)

ख़बरों में
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

जितनी हरियाली होगी, उतना घटेगा प्रदूषण : भूपेंद्र यादव

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के अवसर पर चिड़ियाघर में माखन कटोरी का पौधारोपण करते केंद्रीय पर्यावरण,वन एंव जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव। साथ में केंद्रीय राज्यमंत्री अश्विनी कुमार चौबे व अन्य अधिकारी • ध्रुव कुमार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि धरती पर जितनी हरियाली होगी, उतना ही प्रदूषण घटेगा और जलवायु परिवर्तन की समस्याओं से निजात मिलेगी। इसलिए हर किसी को प्रकृति और पर्यावरण के प्रति गंभीर होते हुए पौधारोपण करना चाहिए। साथ ही प्रकृति की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए। वे वन दिवस पर चिड़ियाघर में पौधारोपण अभियान का शुभारंभ करने के दौरान वृक्ष व वन्य जीव पर आधारित पुस्तकों के विमोचन के अवसर पर लोगों को संबोधित कर रहे थे।

इस अभियान के तहत आजादी के अमृत महोत्सव से प्रेरित होकर चिड़ियाघर में कुल 75 पौधे लगाए गए। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे, वन महानिदेशक व विशेष सचिव चंद्र प्रकाश गोयल व वन मंत्रालय की सचिव लीना नंदन की भी मौजूदगी रही। अश्विनी चौबे ने पर्यावरण की रक्षा के लिए युवाओं को आगे आने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि प्रकृति को बचाने और बढ़ाने के अभियान में युवाओं को हिस्सा लेना चाहिए। इस अवसर सभी ने पौधारोपण किया। भूपेंद्र यादव ने जहां माखन कटोरी का पौधा लगाया, वहीं अश्विनी चौबे ने रुद्राक्ष का पौधा लगाया।

खुल गया चिड़ियाघर, पहले दिन हाउसफुल

सिर्फ ऑनलाइन टिकट, रोज 4 हजार दर्शकों की एंट्री, बच्चे जानवर देखकर हुए खुश

राम त्रिपाठी, नई दिल्ली

Photos : Sunil Kataria

आज फिर पहले जैसे नॉर्मल हालात हैं। पंछियों की चहक और मोर की आवाज सुनकर मन खुश हो गया। बंदिशों में लंबा समय गुजारा है। चिड़ियाघर आने वाले दर्शकों ने इस तरह अपनी खुशी जाहिर की। कोरोना की पाबंदियों में छूट के बाद मंगलवार को चिड़ियाघर लोगों के लिए खुला। अधिकतर दर्शक अपने परिवार के साथ आए थे। हर उम्र के बच्चे चिड़ियाघर में अपने माता-पिता के साथ खुशी मनाते नजर आए। दर्शकों ने बताया कि जानवर और पंछियों के बाड़ों के पास जाकर उनकी आवाज सुनकर वे खुश हुए। उनकी आवाज सुनकर बच्चे चौंक जा रहे थे।

द्वारका से आईं स्वाति शर्मा ने बताया कि घर में बंद रहना बहुत मुश्किल हो गया था। महिलाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आज यहां आकर अच्छा लगा। कृष्णा नगर में रहने वाले विभु ने कहा कि वह बहुत ही उत्साहित हैं। चिड़ियाघर का पहला दिन था। कम लोग थे। मजा आया।

चिड़िया घर के एंट्री गेट के बाहर सैकड़ों लोग हताशा में बैठे हुए थे। वे मायूस थे। कई लोगों को मालूम नहीं था कि टिकट ऑनलाइन ही मिल रहे हैं। जाफराबाद से अपनी पत्नी और बच्चे के साथ आए सैयद तासिर ने कहा कि 2 साल पहले उन्होंने चिड़ियाघर के काउंटर से ही टिकट खरीदे थे। यहां आकर ऑनलाइन टिकट के बारे में पता लगा। उनकी ही तरह कई लोगों को ऑनलाइन टिकट नहीं मिला, जिससे वे निराश थे।

चिड़ियाघर की आर्थिक हालत सुधारने की पहल

राम त्रिपाठी, नई दिल्ली

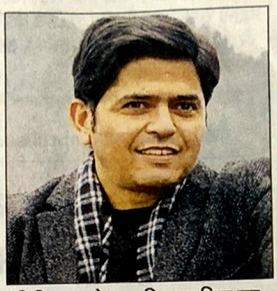

चिड़ियाघर के नए नियुक्त किए गए डायरेक्टर धर्मदेव राय

- डायरेक्टर राय ने बताया, विज्ञापन के लिए चिड़ियाघर में लगाई जाएंगी बड़ी स्क्रीन
- लोगों के पसंदीदा जानवरों को यहां लाने पर भी रहेगा जोर

चिड़ियाघर को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने की योजना पर काम चल रहा है। इसके लिए राजस्व को बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसका एक प्रारूप तैयार हो रहा है। चिड़ियाघर के नवनियुक्त डायरेक्टर धर्मदेव राय ने एनबीटी से विशेष बातचीत में बताया कि राजस्व को मजबूत करना उनकी पहली प्राथमिकता है। डीआईजी धर्मदेव राय की चिड़ियाघर के डायरेक्टर पर स्थायी रूप में नियुक्ति हुई है। पिछले 2 साल में इस पद डीआईजी स्तर के 6 अधिकारियों की नियुक्ति हो चुकी है। उनमें से 1 को छोड़कर बाकी सभी स्थायी रूप से करीब 1 से लेकर 6 महीने के समय के लिए ही नियुक्त हुए थे।

डायरेक्टर राय ने बताया कि देश की राजधानी में चिड़ियाघर होने का लाभ राजस्व बढ़ाने की दिशा में मिल सकता है। इसके लिए कंपनियों के विज्ञापन के जरिए आमदनी बढ़ाना उनका पहला कदम होगा। विज्ञापन के लिए चिड़ियाघर में कई स्थानों पर बड़ी स्क्रीन लगाई जाएंगी। डायरेक्टर राय की प्राथमिकता में चिड़ियाघर में आने वाले दर्शकों की संख्या बढ़ाना भी है। इसके लिए ऐसे जानवरों को चिड़ियाघर में लाया जाएगा जो लोगों के आकर्षण का केंद्र हैं। उन्होंने बताया कि दिल्ली के चिड़ियाघर में जिराफ, जेब्रा आदि एनिमल भी होते थे। वे अभी नहीं हैं। उनको यहां लाने की योजना पर काम किया जाएगा। इससे दर्शकों की संख्या काफी बढ़ेगी और उससे आमदनी बढ़ना तय है। चिड़ियाघर प्रशासन ने 1 साल पहले टिकट के दामों में मामूली वृद्धि की थी। इस समय 1 व्यस्क का टिकट 80 रुपए है। कोरोना के कारण वर्तमान में दर्शकों की संख्या सीमित करके एक दिन में अधिकतम 4 हजार की गई है। इस हिसाब से चिड़ियाघर की आमदनी वर्तमान समय में करीब 30 हजार है। उन्होंने बताया कि स्थिति अब सामान्य हो रही है। दर्शकों की संख्या को बढ़ाने पर भी काम किया जाएगा।

२ मार्च 2022 दैनिक

जागरण सिटी दक्षिणी दिल्ली

खुला चिड़ियाघर, पशु–पक्षियों को देख खुश हुए दर्शक

- पहले से आनलाइन टिकट बुक न होने से मायूस लौटे कई दर्शक
- सफेद बाघ, हाथी और रीछ के बाड़े के पास रही अधिक भीड़

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: चिड़ियाघर [illegible] से दर्शकों के लिए खुल गया [illegible]। कोरोना महामारी की पाबंदी हटने के दो माह बाद चिड़ियाघर दर्शकों से एक बार फिर गुलजार हुआ। शिवरात्रि को लेकर अवकाश होने के चलते चिड़ियाघर में लोगों की अधिक भीड़ रही। स्थिति यह कि कोरोना को देखते हुए प्रतिदिन दर्शकों की तय संख्या से भी अधिक लोग पहुंचे। बिना टिकट बुक किए पहुंचे लोगों को लौटना पड़ा। क्योंकि प्रवेश आनलाइन टिकट के माध्यम से ही है।

यहां सुबह वाले स्लाट में सबसे अधिक लोग पहुंचे। चिड़ियाघर के रेंज अधिकारी सौरभ वशिष्ठ ने बताया कि प्रतिदिन आने वाले दर्शकों की संख्या चार हजार तय की गई है। एक बजे तक 32 सौ से अधिक टिकट बुक हो चुके थे और उसके बाद दूसरे स्लाट में सारी टिकट बुक हो गए थे।

चिड़ियाघर में मंगलवार को सफेद बाघ के बाड़े के बाहर लगी दर्शकों की भीड़ • जागरण

पानी में मस्ती करते दिखे हाथी: चिड़ियाघर में विशाखापट्टनम से जंगली डाग और स्टार कछुए लाए गए हैं, जिनका लोगों ने पहली बार दीदार किया। वहीं, हाथी पानी में मस्ती करते दिखे और रीछ आपस में एक-दूसरे के साथ उठा-पटक करते नजर आए।

चिड़ियाघर के तालाब में जलक्रीड़ा करता हाथी • ध्रुव कुमार

अन्य
चिड़ियाघरों की ख़बरें

पटना चिड़ियाघर में नर जिराफ भीमा और मादा शांति ने शिशु जिराफ को जन्म दिया है। उसकी सीसीटीवी कैमरे से निगरानी हो रही है। अब पटना जू में नन्हे मेहमान के आने से जिराफ की संख्या 6 हो गई है। शिशु जिराफ आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

महीने का वन्यजीव :

कृष्ण मृग

कृष्ण मृग भारतीय उप महाद्वीप के लिए स्थानिक है। भारत में यह उत्तर में पंजाब और हरियाणा से दक्षिण में तमिलनाडु और पश्चिम में गुजरात से ओडिशा तक पाया जाता है।

कृष्ण मृग को अर्धशुष्क झाड़ी और छोटे घास के मैदान पसंद है। यह जंगल और पहाड़ी इलाकों से परहेज करते हुए खुले समतल वन क्षेत्रों में वास करते है। कृष्ण मृग एक दिनचर मृग है, हालाँकि गर्मियों में तापमान में वृद्धि होने पर दोपहर में कम सक्रिय होता है।

कृष्ण मृग एक शाकाहारी जानवर है यह छोटी घास चरता है तथा कभी-कभी पत्ते भी खाता है।

इसको प्राय: प्रोसोपिस जुली फ्लोर के फलों का सेवन करते हुए देखा जा सकता है। यदि घास कम होती है तो प्रोसोपिस एक महत्वपूर्ण खाद्य पदार्थ बन जाता है। पानी काले मृगों की दैनिक आवश्यकता है। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में इसे साल भर प्रतिदिन हरे पत्ते, हरा चारा व मिश्रित दाना दिया जाता है जबकि सर्दियों में (अक्टूबर से मार्च तक) 50 ग्राम अतिरिक्त आंवला प्रतिदिन दिया जाता है।

समूह के आकर में उतार चढ़ाव होता रहता है और यह चारा की उपलब्धता और आवास की प्रकृति पर भी निर्भर करता हैं। बड़े झुंडों में व्यक्तिगत सतर्कता कम होती है। नर अक्सर मादाओं को इक्कठा करने के लिए नर कृष्ण मृगों की और से रणनीति के रूप में लीकिंग को अपनाते हैं। मादा समूहों के वितरण के आधार पर नरो द्वारा प्रदेशो की स्थापना की जाती हैं ताकि मादाओं की अधिक पहुँच सुनिश्चित की जा सके। नर सक्रिय रूप से अपने क्षेत्रों में (1.2 से 12 हेक्टेयर) संसाधनों की रक्षा करते है तथा क्षेत्रों को भी अविरल ग्रंथि और इंटर डिजिटल ग्रंथि स्राव, मल,मूत्र का अपयोग करके गंध से चिन्हित किया जाता है। अन्य नरों को इन क्षेत्रों में जाने की अनुमति नहीं है पर मादाओं को इन स्थानों पर जाने की अनुमति होती है।

काले मृगों का प्रजनन पूरे वर्ष भर चलता रहता है तथा प्रजनन गतिविधि मार्च-अप्रैल और अगस्त-अक्टूबर में सबसे अधिक होती है व्यस्क नर विशेष स्थानों पर नियमित रूप से मल जमा करके एक क्षेत्र स्थापित करता है। नर इस समय के दौरान बेहद आक्रामक होते है और अन्य सभी नरों को उसके क्षेत्र से एक गले की गडगडाहट और एक समसामयिक सींग की लड़ाई से भगाते हैं। गर्भधारण की अवधि छ : महीने की होती हैं और ज्यादातर समय एक ही बच्चे का जन्म होता हैं। बच्चा जन्म के तुरंत बाद दौड़ने में सक्षम होता हैं। कृष्ण मृग 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से दौड सकता हैं।

काले मृगों को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम की सूची -1 के तहत संरक्षित किया गया है। वर्तमान में दिल्ली चिड़ियाघर के संग्रह में 103 सामान्य व् 29 रंजकहीन (सफ़ेद) मृग है। मानव आबादी और कृषि के उद्देश्य से घास के मैदानों के बढ़ते उपयोग के कारण जंगल में काले मृगों की संख्या घट रही है।

काले मृगों का औसतन जीवन काल 10-15 वर्ष है।

महीने का वृक्ष :
पलाश का पेड़

सामान्य नाम: **पलाश, ढ़ाक, टेसू**
वैज्ञानिक नाम: **ब्यूटिया मोनोस्पर्मा**

प्राप्ति स्थान- यह वृक्ष भारत और दक्षिण पूर्वी एशिया के बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान, थाईलैंड, कम्बोडिया, मलेशिया, श्रीलंका आदि में बहुतायत में देखा जा सकता है।पलास भारतवर्ष के सभी प्रदेशों और सभी स्थानों में पाया जाता है। पलास का वृक्ष मैदानों और जंगलों ही में नहीं, ४००० फुट ऊँची पहाड़ियों की चोटियों पर किसी न किसी रूप में अवश्य मिलता है। पलाश का फूल उत्तर प्रदेश और झारखण्ड का राज्य पुष्प है और इसको 'भारतीय डाकतार विभाग' द्वारा डाक टिकट पर प्रकाशित कर सम्मानित किया जा चुका है।

सामान्य जानकारी

पलाश (पलास, छूल, परसा, ढाक, टेसू, किंशुक, केसू) एक वृक्ष है जिसके फूल बहुत ही आकर्षक होते हैं। इसके आकर्षक फूलों के कारण इसे "जंगल की आग" भी कहा जाता है। एक "लता पलाश" भी होता है। लता पलाश दो प्रकार का होता है। एक तो लाल पुष्पो वाला और दूसरा सफेद पुष्पो वाला। लाल फूलों वाले पलाश का वैज्ञानिक नाम "ब्यूटिया मोनोस्पर्मा" है। सफेद पुष्पो वाले लता पलाश को औषधीय दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी माना जाता है। वैज्ञानिक दस्तावेज़ों में दोनो ही प्रकार के लता पलाश का वर्णन मिलता है। सफेद फूलों वाले लता पलाश का वैज्ञानिक नाम "ब्यूटिया पार्वीफ्लोरा" है जबकि लाल फूलो वाले को "ब्यूटिया सुपर्बा" कहा जाता है।

यह तीन रूपों में पाया जाता है- वृक्ष रूप में, क्षुप रूप में और लता रूप में। बगीचों में यह वृक्ष रूप में और जंगलों तथा पहाड़ों में अधिकतर क्षुप रूप में पाया जाता है।

पत्ते इसके गोल और बीच में कुछ नुकीले होते हैं जिनका रंग पीठ की ओर सफेद और सामने की ओर हरा होता है। पत्ते सीकों में निकलते हैं और एक में तीन-तीन होते हैं। छाल मोटी और रेशेदार होती है। लकड़ी बड़ी टेढ़ी मेढ़ी होती है। कठिनाई से चार पाँच हाथ सीधी मिलती है।

फूल छोटा, अर्धचंद्राकार और गहरा लाल होता है। फूल को प्रायः टेसू कहते हैं और उसके गहरे लाल होने के कारण अन्य गहरी लाल वस्तुओं को 'लाल टेसू' कह देते हैं। फूल वसंतागमन के अंत और चैत के आरंभ में लगते हैं। उस समय पत्ते तो सबके सब झड़ जाते हैं और पेड़ फूलों से लद जाता है जो देखने में बहुत ही भला मालूम होता है। 'पलास-बीज'-फूल झड़ जाने पर चौड़ी चौड़ी फलियाँ लगती है जिनमें गोल और चिपटे बीज होते हैं। फलियों को 'पलास पापड़ा' या 'पलास पापड़ी' और बीजों को 'पलास-बीज' कहते हैं।

दैनिक जीवन में पलाश के पेड़ की उपयोगिता

पलाश के पत्ते प्रायः पत्तल और दोने आदि के बनाने के काम आते हैं। जड़ की छाल से जो रेशा निकलता है उसकी रस्सियाँ बटी जाती हैं। दरी और कागज भी इससे बनाया जाता है। इसकी पतली डालियों को उबालकर एक प्रकार का कत्था तैयार किया जाता है जो बंगाल में अधिक खाया जाता है। मोटी डालियों और तनों को जलाकर कोयला तैयार करते हैं। छाल पर बछने लगाने से एक प्रकार का गोंद भी निकलता है जिसको 'चुनियाँ गोंद' या पलास का गोंद कहते हैं। प्राचीन काल से ही होली के रंग इसके फूलो से तैयार किये जाते रहे है।

चिकित्सीय उपयोगिता

वैद्यक में पलाश के फूल को स्वादु, कड़वा, गरम, कसैला, वातवर्धक शीतज, चरपरा, मलरोधक तृषा, दाह, पित्त कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ का नाशक; फल को रूखा, हलका गरम, पाक में चरपरा, कफ, वात, उदररोग, कृमि, कुष्ठ, गुल्म, प्रमेह, बवासीर और शूल का नाशक; बीज को स्तिग्ध, चरपरा गरम, कफ और कृमि का नाशक और गोंद को मलरोधक, ग्रहणी, मुखरोग, खाँसी और पसीने को दूर करनेवाला लिखा है। फूल और बीज ओषधिरूप में प्रयोग होते हैं। पलाश के बीज में पेट के कीड़े मारने का गुण विशेष रूप से निहित होता है।

धार्मिक उपयोगिता

यह वृक्ष हिंदुओं के पवित्र माने हुए वृक्षों में से हैं। इसका उल्लेख वेदों तक में मिलता है। श्रोत्रसूत्रों में कई यज्ञपात्रों के इसी की लकड़ी से बनाने की विधि है। गृह्यासूत्र के अनुसार उपनयन के समय में ब्राह्मणकुमार को इसी की लकड़ी का दंड ग्रहण करने की विधि है। वसंत में इसका पत्रहीन पर लाल फूलों से लदा हुआ वृक्ष अत्यंत नेत्र सुखद लगता है।

1. हरे पत्तों जैसा मेरा रंग,
   हरी मिर्ची मुझे बहुत पसंद,
   मेरा नाम बुझो तो जाने ___?

2. ऊंट की सी बैठक,
   हिरन सी तेज चाल,
   वो कौन सा जानवर है,
   जिसके पूँछ ना बाल ___?

3. कान नहीं फिर भी सुनता हूँ,
   मेरे डंक से डरता हर कोई,
   नीचे गोरा ऊपर काला,
   है कोई मेरा नाम बताने वाला ___?

4. गोल-गोल आँखे है इसकी,
   लम्बे-लम्बे इस के कान,
   खाने में पसंद इसको गाजर,
   बताओं क्या है इसका नाम ___?

5. गणपति जैसा मुख है मेरा,
   काया बहुत विशाल,
   सबसे बड़ा जानवर हूँ मैं,
   मस्त है मेरी चाल ___?

6. उछले दौड़े कूदे दिनभर,
   यह दिखने में बड़ा ही सुंदर,
   लेकिन नहीं ये भालू, बन्दर,
   इसके नाम में जुड़ा है रन ___?

7. रंग बिरंगा बदन है इसका,
   कुदरत का वरदान मिला,
   इतनी सुन्दरता पाकर भी,
   दो अक्षर का नाम मिला,
   ये वन में करता है शोर,
   नाम बताओ ये है कौन ___?

उत्तर (Answer)

तोता (Parrot)
मेंढक (Frog)
सांप (Snake)
खरगोश (Rabbit)
हाथी (Elephant)
हिरन (Deer)
मोर (Peacock)

शब्द कोश से: शीत निंद्रा (Hybernation)

शीत निंद्रा : वह विरामावस्था है जब कुछ जीव निष्क्रिय रहकर शीतकाल में भूमि के नीचे जीवन व्यतीत करते है।

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

मथुरा रोड, नई दिल्ली-110 003

दूरभाष: +91-11-24358500, 24359825

ई-मेल: nzpzoo-cza@nic.in, वेब: www.nzpnewdelhi.gov.in

हमें फ़ॉलो करें

Design by conceptzandbeyond.com